ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(दूसरा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (दूसरा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(दूसरा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

पिछले इतवार को ख़ानदानी झगड़े और उनको ख़त्म करने के बारे में कुछ अर्ज़ किया था। एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन इख़्तिलाफ़ों और झगड़ों को ख़त्म करने का एक और तरीक़ा बयान फ़रमाया है। वह हदीस यह है कि:

عن ابن عمر رضی اللّٰه عنه عن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال: المسلم اذا کان یخالط الناس ویصبر علی أذا هم خیر من المسلم الذی لا یخالط الناس ولا یصبر علی أذا هم۔ (ترمذی شریف)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत

करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान वह है जो लोगों से अलग थलग होकर बैठ गया, लोगों से किनारा इख़्तियार कर लिया। जैसे वह किसी मस्जिद में या मदरसे में या इबादत गाह में बैठ गया ताकि लोगों से साबक़ा पेश न आए, और यह सोचा कि मैं तन्हाई में इबादत करता रहूंगा। दूसरा मुसलमान वह है जिसने तन्हाई इख़्तियार नहीं की, बल्कि लोगों से मिला जुला रहा, लोगों से ताल्लुक़ात भी हैं, रिश्तेदारियां और दोस्तियां भी हैं, और उनके साथ उठता बैठता भी है, और फिर साथ रहने और उनके साथ मामलात करने के नतीजे में लोगों से तक्लीफ़ें भी पहुंचती हैं, और वह उन तक्लीफ़ों पर सब्र करता है। फ़रमाया कि यह दूसरा मुसलमान जो लोगों के साथ मिलकर रहता है और उनकी तक्लीफ़ों पर सब्र करता है, यह मुसलमान उस मुसलमान से जो लोगों से अलग थलग रहता है और उसके नतीजे में उसको तक्लीफ़ों पर सब्र करने की ज़रूरत भी पेश नहीं आती, कहीं ज़्यादा बेहतर है।

इस्लाम में रहबानियत नहीं

यह आप हज़रात को मालूम ही है कि हमारे दीन ने ईसाई मज़हब की तरह रहबानियत (यानी दुनियावी मामलात से बिल्कुल बे ताल्लुक़ हो जाने) की तालीम नहीं दी, ईसाइयों के यहां अल्लाह तआ़ला की नज़्दीकी हासिल करना उस वक़्त तक मुम्किन नहीं है जब तक इन्सान अपने सारे दुनियावी कारोबार को न छोड़े और अपने तमाम

ताल्लुक़ात को न छोड़ दे, और रहबानियत की ज़िन्दगी न गुज़ारे। लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें यह तालीम दी कि लोगों के साथ मिले जुले रहो और फिर लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करो।

साथ रहने से तक्लीफ़ पहुंचेगी

अगर आप ग़ौर करें तो यह अ़जीब व ग़रीब तालीम है, क्योंकि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों के साथ मिले जुले रहने को और उनसे पहुंचने वाली तक्लीफ़ को एक साथ ज़िक्र फ़रमाया है। जिस से यह मालूम हो रहा है कि ये दोनों काम एक दूसरे के लिए लाज़िम और मलज़ूम हैं। यानी जब तुम लोगों के साथ मिलो जुलोगे और उनके साथ रहोगे तो उनसे तुम्हें ज़रूर तक्लीफ़ पहुंचेगी। और जब तुम्हारा किसी भी दूसरे इन्सान से वास्ता पेश आयेगा तो यह मुम्किन नहीं कि उस से तुम्हें कभी भी कोई तक्लीफ़ न पहुंचे, लाज़मी बात है कि तक्लीफ़ पहुंचेगी, चाहे वह तुम्हारा कितना ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो, और चाहे वह कितना ही क़रीबी दोस्त हो। अब सवाल यह है कि यह तक्लीफ़ क्यों पहुंचेगी? इसको भी समझ लेना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला की कामिल क़ुदरत इन्सान के चेहरे में

इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने जब से हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, उस वक़्त से

लेकर आज तक अरबों खरबों इन्सानों को पैदा फ़रमाया, आगे क़ियामत तक पैदा होते रहेंगे, और हर इन्सान को अल्लाह तआला ने एक चेहरा अता फ़रमाया है जो बालिश्त भर का है, उसमें आंख भी है, नाक भी है, मुंह भी है, दांत भी हैं, और कान भी हैं, रुख़्सार भी हैं, और ठोड़ी भी है, हर इन्सान के चेहरे में ये चीज़ें मौजूद हैं लेकिन इतने अरबों, खरबों, पदमों इन्सानों में किसी दो इन्सानों का चेहरा सौ फ़ीसद एक जैसा नहीं होता। अल्लाह तआला की कामिल क़ुदरत देखिए कि हर इन्सान के चेहरे की लम्बाई एक बालिश्त है, और यह भी नहीं कि किसी इन्सान की नाक हो किसी की नाक न हो, किसी के कान हों किसी के कान न हों, किसी की आंखें हों किसी की न हों, बल्कि तमाम इन्सानों के चेहरे में ये सब चीज़ें भी होती हैं, लेकिन किसी दो इन्सानों का चेहरा एक जैसा नहीं मिलेगा, बल्कि हर इन्सान का चेहरा दूसरे से अलग होगा। और यह अलग होना और इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ उन इन्सानों के चेहरों में नहीं जो अब तक पैदा हो चुके हैं, बल्कि जो नये इन्सान पैदा हो रहे हैं, उनके अन्दर भी यह इख़्तिलाफ़ मौजूद है। ऐसा नहीं है कि अब जो नया इन्सान पैदा होगा वह किसी पहले इन्सान की कॉपी और नक़ल होगा, ऐसा नहीं है, बल्कि नया पैदा होने वाला इन्सान अपना चेहरा ख़ुद लेकर आयेगा। इस तरह अल्लाह तआला ने एक इन्सान को दूसरे इन्सान से ऐसा मुम्ताज़ और अलग कर दिया कि चेहरे के नुक़ूश देख कर पता चल जाता है कि यह फ़लां इन्सान है और

यह फ़लां इन्सान है।

रंगों की विभिन्नता में कुदरत का नज़ारा

और यह भी अल्लाह तआला की कुदरत का करिश्मा है कि मुख़्तलिफ़ नस्लों के इन्सानों के नुकूश में एक चीज़ ऐसी है जो सब में मुश्तरक है, और एक चीज़ ऐसी है जिस से उसकी पहचान और फ़र्क़ होती है। जैसे अफ़रीक़ी नस्ल के जो इन्सान होंगे वे दूर से देख कर पहचान लिए जायेंगे कि यह अफ़रीक़ी नस्ल का है। "योरप" वाला अलग पहचान लिया जायेगा कि यह योरप का है, इसके बावजूद उनके दरमियान भी आपस में फ़र्क़ है, कोई दो फ़र्द एक जैसे नहीं हैं। इसलिए मुश्तरक होने के बावजूद फ़र्क़ और इम्तियाज़ भी मौजूद है। ये सब अल्लाह तआला की कुदरत का नज़ारा है, इन्सान कहां इस कुदरत का इहाता कर सकता है।

उंगलियों के पोरों में अल्लाह की कुदरत

और चीज़ों को छोड़िए! उंगलियों के पोरों को ले लें, हर इन्सान के हाथ की उंगलियों के पोरे दूसरे इन्सान के पोरे से मुख़्तलिफ़ और अलग हैं। चुनांचे काग़ज़ों पर बेशुमार ज़रूरतों के लिए दस्तख़त (हस्ताक्षर) लेने के साथ साथ अंगूठा भी लगवाया जाता है, इसलिए कि उंगूठे के पोरे में जो छोटी छोटी लकीरें हैं, वे किसी एक इन्सान की लकीरें दूसरे इन्सान की लकीरों से नहीं मिलतीं। हर एक की लकीरें अलग हैं। अगर वैसे दो इन्सानों के अंगूठे

मिलाकर देखें तो यह नज़र आयेगा कि कोई फ़र्क़ नहीं है, लेकिन यह बात पूरी दुनिया में मुसल्लम और तयशुदा है कि दो इन्सानों के अंगूठों की लकीरें एक जैसी नहीं हैं। इसलिए जब किसी इन्सान ने किसी काग़ज़ पर अंगूठा लगा दिया तो यह मुताय्यन हो गया कि यह फ़लां इन्सान के अंगूठे के निशान हैं, क्योंकि दूसरे इन्सान के अंगूठे के निशान उस से अलग होंगे।

अंगूठे की लकीरों के माहिरीन का दावा

अब तो ऐसे माहिरीन भी पैदा हो गए हैं कि जिनका यह दावा है कि हमारे सामने किसी इन्सान के अंगूठे के निशान रख दिए जाएं, हम उसके निशानों को बड़ा करके देखेंगे, और उसके ज़रिए हम उस इन्सान के सर से लेकर पांव तक सारी शक्ल व सूरत और जिस्मानी बनावट का नक़्शा खींच सकते हैं। इसलिए कि वे लकीरें यह बता देती हैं कि उस इन्सान की आंखें कैसी होंगी, उसकी नाक कैसी होगी, उसके दांत कैसे होंगे और हाथ कैसे होंगे?

हम अंगूठे के पोरे को दोबारा बनाने पर क़ादिर हैं

मैंने अपने वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से सुना कि कुरआने करीम की सूरः "क़ियामत" में एक आयत है, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि:

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ، بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ۔

(سورة القيٰمة: آيت ٣،٤)

क्या यह (काफ़िर) इन्सान यह समझता है कि हम उसकी हड्डियां जमा नहीं कर सकेंगे। ये काफ़िर जो आख़िरत के इन्कारी हैं, वे यह कहा करते थे कि जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे और हमारी हड्डियां तक गल जायेंगी, फिर किस तरह से हमें दोबारा ज़िन्दा किया जा सकेगा? और कौन ज़िन्दा करेगा?

इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं कि क्या इन्सान यह गुमान करता है कि हम उसकी हड्डियां दोबारा जमा नहीं कर सकेंगे? क्यों नहीं! हम तो इस पर भी क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों के पोरों को भी वैसा ही दोबारा बना दें। इस कायनात का बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी यह नहीं कर सकता कि वैसा ही अंगूठा बना दे, लेकिन हम इस पर क़ादिर हैं।

आयत सुनकर मुसलमान होना

अल्लाह तआ़ला यह भी कह सकते थे कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उसका चेहरा दोबारा बना दें, उसके हाथ दोबारा बना दें, उसके पांव दोबारा बना दें; लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ख़ास तौर पर पोरों का ज़िक्र फ़रमाया कि पोरे को दोबारा बनाने पर क़ादिर हैं। मेरे वालिद माजिद रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि एक नौ मुस्लिम वैज्ञानिक इस आयत को पढ़कर मुसलमान हो गया, और उसने यह कहा कि यह बात सिवाए कायनात के पैदा करने वाले के कोई दूसरा नहीं कह सकता कि हम इस पोरे को दोबारा बना सकते हैं, यह बात सिर्फ़ वही कह सकता है

जिस्ने इस कायनात को बनाया हो। जिसने इन्सान को पैदा किया हो, जिसने इन्सान के एक एक अंग को बनाया हो।

अल्लाह तआ़ला की कामिल कुदरत

बहर हाल! कोई इन्सान अपनी ज़ाहिरी शक्ल व सूरत में दूसरे इन्सान जैसा नहीं है, बल्कि अगर दो इन्सान एक जैसे हो जाएं तो इस पर ताज्जुब होता है कि देखो ये दो इन्सान हम—शक्ल हैं। अलग अलग होने पर कोई ताज्जुब नहीं होता, इसलिए कि हर इन्सान दूसरे से अलग है। हालांकि ताज्जुब की बात तो यह है कि अलग अलग कैसे हैं, अगर सारे इन्सान एक दूसरे के हम—शक्ल होते तो ताज्जुब की बात न होती, लेकिन अल्लाह तआ़ला की कुदरते कामिला को देखिए कि उसने अरबों खरबों इन्सान पैदा फ़रमा दिए, मगर हर एक की सूरत दूसरे से अलग है। मर्द की सूरत अलग है, औ़रत की सूरत अलग है, हर एक सिन्फ़ में एक दूसरे से इम्तियाज़ और फ़र्क़ भी मौजूद है, एक दूसरे से इश्तिराक (यानी एक जैसा होना) भी मौजूद है।

दो इन्सान के मिज़ाजों में इख़्तिलाफ़

इसलिए जब दो इन्सानों के चेहरे एक जैसे नहीं हो सकते, तो फिर दो इन्सानों की तबीयतें कैसे एक जैसी हो सकती हैं। जब ज़ाहिर एक जैसा नहीं तो फिर उनकी तबीयतों में भी फ़र्क़ होगा। किसी की तबीयत कैसी है,

किसी की कैसी है। किसी का मिज़ाज कैसा है, किसी का मिज़ाज कैसा है। किसी की पसन्द कुछ है किसी की कुछ है। हर इन्सान की पसन्द अलग, हर इन्सान का मिज़ाज अलग, हर इन्सान की तबीयत अलग। इसलिए तबीयतों के मुख़्तलिफ़ और अलग होने की वजह से कभी यह नहीं हो सकता कि दो आदमी एक साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हों और एक साथ रहते हों, और कभी भी उनमें से एक को दूसरे से तक्लीफ़ न पहुंचे, ऐसा होना मुम्किन ही नहीं। तबीयत मुख़्तलिफ़ और अलग होने की वजह से एक को दूसरे से ज़रूर तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी जिस्मानी तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी रूहानी तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी नफ़्सियाती तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी दूसरे की तरफ़ से तबीयत के ख़िलाफ़ बात होगी जो दूसरे को बुरी लगेगी।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के मिज़ाज अलग अलग थे

देखिए! इस कायनात में अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से ज़्यादा अफ़ज़ल मख़्लूक़ इस ज़मीन व आसमान की निगाहों ने नहीं देखी। अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से ज़्यादा अफ़ज़ल, उनसे ज़्यादा मुत्तक़ी, उनसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले, उनसे ज़्यादा ईसार करने वाले, उनसे ज़्यादा एक दूसरे पर जान निसार करने वाली कोई मख़्लूक़ पैदा नहीं हुई और न आईन्दा पैदा

होगी। लेकिन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तबीयतें भी मुख़्तलिफ़ और अलग थीं, उनके आपस के मिज़ाज में भी फ़र्क़ था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपकी पाक बीवियों के दरमियान ना इत्तिफ़ाक़ी

रूए ज़मीन पर कोई बीवी अपने शौहर के लिए इतनी वफ़ादार और इतना ख़्याल रखने वाली नहीं हो सकती जितनी कि उम्महातुल मोमिनीन (यानी नबी करीम की पाक बीवियां जो तमाम मुसलमानों की मां होने का रुतबा रखती हैं) नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ख़्याल रखने वाली थीं, लेकिन उनको भी तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आ जाती थीं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी कभी कभी तबीयत के ख़िलाफ़ होने की वजह से उनसे कुछ गिरानी और नाराज़गी हो जाती थी। चुनांचे एक बार इस नागवारी की वजह से एक महीना ऐसा गुज़रा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसमें क़सम खा ली थी कि मैं एक महीने तक अपनी पाक बीवियों के पास नहीं जाऊंगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नाराज़गी

और फिर यह नहीं कि पाक बीवियों की तरफ़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गिरानी होती थी बल्कि कभी कभी पाक बीवियों रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्–न को भी

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से गिरानी हो जाती थी। चुनांचे एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि ऐ आ़यशा! मुझे पता चल जाता है जब तुम मुझ से राज़ी होती हो और जब तुम मुझ से नाराज़ होती हो। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा कि कैसे? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुझ से ख़ुश होती हो तो क़सम खाते वक़्त यह कहती हो "व रब्बि मुहम्मद यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के परवर्दिगार की क़सम" और जब मुझ से नाराज़ होती हो तो क़सम खाते वक़्त यह कहती हो "व रब्बि इब्राहीम यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के रब की क़सम" हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया: "ला अहजुरु इल्ला इस्म–क" या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ऐसे मौक़े पर मैं सिर्फ़ आपका नाम ही छोड़ती हूं लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत दिल से जुदा नहीं होती। अब देखिए! सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा शफ़ीक़ व मेहरबान कोई और हो सकता है? ख़ास तौर पर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत का जो आ़लम था वह कोई छुपी चीज़ नहीं, लेकिन इसके बावजूद हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को भी कभी कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कुछ गिरानी पैदा हो जाती थी, और उस

गिरानी और नाराज़गी का एहसास नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी हो जाता था।

मियां बीवी के ताल्लुक़ की हैसियत से नाराज़गी

लेकिन कोई यह न समझे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो तक्लीफ़ पहुंचाना मआ़ज़ल्लाह कुफ़्र है। तो अगर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तक्लीफ़ पहुंची तो यह कितनी बुरी बात हुई। बात असल में यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हैसियतें अलग अलग रखी हैं। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो गिरानी होती थी वह एक शौहर होने की हैसियत से होती थी, जिस तरह बीवी को शौहर पर नाज़ होता है, ऐसे ही शौहर को भी बीवी पर नाज़ होता है, उस नाज़ के आ़लम में इस क़िस्म की नाराज़गी भी हो जाया करती थी। इसका रिसालत के मन्सब (ओहदे) से कोई ताल्लुक़ नहीं था।

हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के मिज़ाजों में इख़्तिलाफ़

बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपकी पाक बीवियों के दरमियान भी तबीयत के ख़िलाफ़ उमूर पैदा हो जाते थे। और आगे बढ़िए, हज़रत सिद्दीक़े अकबर और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जिनको "शैख़ैन" कहा जाता है। अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद इन दोनों बुज़ुर्गों से ज़्यादा अफ़ज़ल

इन्सान इस रूए ज़मीन पर पैदा नहीं हुए। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ इन दोनों के ताल्लुक़ का आ़लम यह था कि सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़रमाते हैं कि इन दोनों के नाम हमेशा एक साथ आया करते थे।

चुनांचे हम यों कहा करते थे कि:

جاء أبو بكرؓ وعمرؓ، ذهب ابوبكرؓ وعمرؓ، خرج أبوبكرؓ و عمرؓ-

यानी अबू बक्र और उमर आए, अबू बक्र और उमर गए, अबू बक्र और उमर निकले।

जहां नाम आ रहा है दोनों का एक साथ आ रहा है। इस तरह एक जान दो क़ालिब थे। हर वक़्त इन दोनों का नाम सामने होता। जहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मश्विरा करने की ज़रूरत पेश आती, फ़रमाते ज़रा अबू बक्र और उमर को बुलाओ, कभी दोनों में जुदाई का तसव्वुर नहीं होता था।

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की इज़्ज़त करने का यह आ़लम था कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि आप मेरी ज़िन्दगी की सारी इबादतें मुझ से ले लीजिए और सारे आमाल मुझ से ले लें और वह एक रात जो आपने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ 'ग़ारे सौर' में गुज़ारी है वह मुझे दे दीजिए। दोनों के दरमियान सम्मान और मुहब्बत का यह आ़लम था, लेकिन दोनों की

तबीयतों में इख़्तिलाफ़ था जिसकी वजह से कभी कभी उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ भी हो जाता था।

हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि के दरमियान इख़्तिलाफ़ का एक वाक़िआ

चुनांचे हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार इन दोनों के दरमियान बात चीत हो रही थी, हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कोई बात कह दी जिसकी वजह से हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु नाराज़ होकर चल दिए। अब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनको मनाने के लिए और समझाने के लिए उनके पीछे पीछे चल दिए। चलते चलते हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने घर में दाख़िल हो गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह देखा कि यह तो बहुत ज़्यादा नाराज़ हो गए हैं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके चेहरे को देखकर समझ गए या "वही" के ज़रिए अल्लाह तआ़ला ने आपको ख़बर दे दी। चुनांचे अभी हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस की तरफ़ आ रहे थे कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को जो मज्लिस में बैठे हुए थे, ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि यह जो तुम्हारे दोस्त आ रहे हैं, यह आज किसी से झगड़ा करके आ रहे हैं। चुनांचे हज़रत सिद्दीक़े

अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मज्लिस में आकर बैठ गए।

दूसरी तरफ़ जब हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्होंने घर में दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया था, जब तन्हाई में पहुंचे तो उनको बड़ी शर्मिन्दगी और नदामत हुई कि मैंने यह बहुत बुरा किया कि अव्वल तो हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़गी का इज़हार किया, फिर जब वह मेरे पीछे आए तो मैंने घर में दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। चुनांचे घर से बाहर निकले और हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे चल पड़े कि जाकर उनको मनाऊं। जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में पहुंचे तो देखा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं और हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे हैं। मज्लिस में आकर अपनी नदामत और शर्मिन्दगी का इज़हार शुरू कर दिया कि या रसूलल्लाह! मुझ से ग़लती हो गई। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगेः या रसूलल्लाह! मुझ से ग़लती हुई थी, उनसे ज़्यादा ग़लती नहीं हुई। आप उनको माफ़ कर दीजिए, असल में ग़लती मेरी थी। उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़िताब करते हुए अजीब व ग़रीब जुम्ला इर्शाद फ़रमाया। फ़रमाया किः

क्या मेरे साथी को मेरे लिए छोड़ोगे या नहीं? यह वह शख़्स है कि जब मैंने यह कहा था किः

يَآ اَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا۔

ऐ लोगो! मैं तुम सब के लिए अल्लाह का रसूल बनकर आया हूं। उस वक़्त तुम सब ने कहा था कि "कज़ब्-त" (यानी तुम झूठ बोलते हो) सिर्फ़ इसने कहा था "सदक़्-त" (यानी आप सच कहते हैं) यह तन्हा वह शख़्स था जिसने कहा था कि तुम सच कहते हो।

बहर हाल! सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु और फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे इन्सान जिनका ज़िक्र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में एक साथ आता था, उनकी तबीयतों में और मिज़ाजों में भी इख़्तिलाफ़ था जिसके नतीजे में उनके दरमियान भी इस क़िस्म के वाक़िआत पेश आए।

मिज़ाजों का इख़्तिलाफ़ हक़ है

इस से मालूम हुआ कि कोई दो इन्सान ऐसे नहीं हैं जिनकी तबीयतें एक जैसी हों। जैसा तुम चाहते हो दूसरा भी वैसा ही हो, यह नहीं हो सकता। कोई बाप चाहे कि मेरा बेटा सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता, कोई बेटा यह चाहे कि मेरा बाप सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता, कोई शौहर यह चाहे कि मेरी बीवी सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकती, कोई बीवी यह चाहे कि मेरा शौहर सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता।

सब्र नहीं करोगे तो लड़ाईयां होंगी

इसलिए जब आदमियों के साथ रहना होगा तो फिर

तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी, आदमियों के साथ रहना और उनसे तक्लीफ़ें पहुंचना यह दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इन दोनों को एक दूसरे से जुदा किया ही नहीं जा सकता। इसलिए जब आदमियों के साथ रहना है तो यह चोच कर रहना होगा कि उनसे मुझे तक्लीफ़ भी पहुंचेगी और उस तक्लीफ़ पर मुझे सब्र भी करना होगा, अगर सब्र नहीं करोगे तो लड़ाईयां, झगड़े, फ़ितने और फ़साद होंगे, और ये चीज़ें वे हैं जो दीन को मूंड देने वाली हैं।

इसलिए जिस किसी से कोई ताल्लुक़ हो, चाहे वह ताल्लुक़ रिश्तेदारी का हो, चाहे वह ताल्लुक़ दोस्ती का हो, चाहे वह निकाह का ताल्लुक़ हो, लेकिन यह समझ लेना चाहिए कि उन ताल्लुक़ात में तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी, और उन तक्लीफ़ों पर मुझे सब्र करना होगा, और उन तक्लीफ़ों को मुस्तक़िल झगड़ेग का ज़रिया नहीं बनाऊंगा। ठीक है साथ रहने के नतीजे में तल्ख़ी भी थोड़ी बहुत हो जाती है, लेकिन उस तल्ख़ी को मुस्तक़िल झगड़े और नफ़रत पैदा करने का ज़रिया बनाना ठीक नहीं।

तक्लीफ़ों से बचने का तरीक़ा

अब सवाल यह है कि जब दूसरों के साथ रहने की वजह से तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उस तक्लीफ़ पर अपने आपको कैसे तसल्ली दें? उस तक्लीफ़ से अपने आपको कैसे बचाएं? और तबीयत के ख़िलाफ़ होने के बावजूद आपस में कैसे मुहब्बतें पैदा करें? इसका नुस्ख़ा भी जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतला दिया,

कोई बात आप अधूरी छोड़ कर नहीं गए। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मियां बीवी के ताल्लुक़ के बारे में बयान फ़रमाया, क्योंकि सब से ज़्यादा तबीयत के ख़िलाफ़ बातें मियां बीवी के ताल्लुक़ात में ही पेश आती हैं। इसलिए कि जितनी निकटता ज़्यादा होगी, उतनी ही तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आने का भी इम्कान होगा, और मियां बीवी के दरमियान जितनी नज़्दीकी होती है वह किसी और रिश्ते में नहीं होती। चूंकि इस ताल्लुक़ में दूसरे ताल्लुक़ के मुक़ाबले में तक्लीफ़ पहुंचने के इम्कानात (संभावनाएं) ज़्यादा हैं, इसलिए इसके बारे में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक क़ीमती नुस्ख़ा बयान फ़रमा दिया, वह यह है कि:

لا يفرك مؤمن مؤمنة إن سخط منها خلقًا رضى منها اٰخر (مسلم شريف)

यानी कोई मोमिन मर्द किसी मोमिना औ़रत से बुग्ज़ न रखे। मतलब यह है कि कोई शौहर अपनी बीवी से मुस्तक़िल बुग़्ज़ न रखे। क्योंकि अगर वह अपनी बीवी की किसी बात को ना पसन्द करेगा तो दूसरी किसी बात को पसन्द भी करेगा। यानी जब बीवी से तबीयत के ख़िलाफ़ कोई मामला पेश आता है तो तुम नाराज़ होते हो और बुरा मनाते हो, और उसी बात को लिए बैठे रहते हो कि यह ऐसी है, यह यों करती है, यों करती है, इसमें यह ख़राबी है, यह ख़राबी है। ख़ुदा के लिए यह देखो कि उसके अन्दर कुछ अच्छाईयां भी तो होंगी। इसलिए जब बीवी से कोई बात ऐसी सामने आए जो तुम्हें बुरी लग रही है तो उस

वक़्त उस बात का तसव्वुर करो जो तुम्हें पसन्दीदा है। जब अच्छाई का तसव्वुर करोगे तो उस बुराई के एहसास में कमी आयेगी।

सिर्फ़ अच्छाईयों की तरफ़ देखो

याद रखिए! दुनिया में कोई इन्सान पूरी तरह स्याह या सफ़ेद नहीं होता, कोई पूरा का पूरा ख़ैर या शर नहीं होता, अगर कोई बुरा है तो उसमें कुछ न कुछ भलाई भी ज़रूर होगी, अगर भला है तो उसमें कुछ न कुछ बुराई भी ज़रूर होगी। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपनी बीवी की अच्छाई की तरफ़ ध्यान करो, उसके नतीजे में तुम्हें नज़र आयेगा कि यह बात अगरचे उसके अन्दर तक्लीफ़ देने वाली है, लेकिन दूसरी बातें मेरी बीवी के अन्दर क़ाबिले क़द्र और तारीफ़ के क़ाबिल हैं। यह सोचने से सब्र आ जायेगा।

एक दिलचस्प वाक़िआ

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक साहिब का बड़ा अच्छा इलाज किया। वह इस तरह कि एक साहिब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी बीवी की शिकायत करने लगे कि उसमें फ़लां आ़दत बड़ी ख़राब है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः "तल्लिक़हा" यानी अगर वह इतनी ख़राब है कि तुम्हारे लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त है तो उसको तलाक़ दे दो। अब उसका दिमाग़

ठीक हो गया और उसने सोचा कि अगर मैंने उसको तलाक़ दे दी और वह चली गई तो मुझ पर क्या गुज़रेगी। इसलिए उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि "ला अस्बिरु अ़न्हा" या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! उसके बग़ैर सब्र भी नहीं आता। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "अमसिक्हा" फिर उसको रोके रखो। यानी जब उसके अन्दर ख़राबी है, लेकिन उसके बग़ैर सब्र भी नहीं आता तो इसका इलाज इसके अ़लावा कुछ नहीं कि उसको रोके रखो और उसकी उस ख़राबी को बर्दाश्त करो। लेकिन अपनी तरफ़ से उसकी इस्लाह (सुधार) की जितनी कोशिश तुम से हो सकती है वह कर लो।

बीवी के कामों को सोचो

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने अपनी बीवी की ख़राबी बयान की तो आपने फ़ौरन उस से यह कह दिया कि उसको तलाक़ दे दो। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको एक दम से तलाक़ देने का मश्विरा क्यों दे दिया? इसका जवाब यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तलाक़ देने का मश्विरा इसलिए दिया कि असल में उस शख़्स का सारा ध्यान अपनी बीवी की बुराई की तरफ़ लगा हुआ था, उसकी वजह से उसके दिल में उसकी बुराई इस तरह बैठ गयी थी कि उसका अपनी बीवी

की अच्छाईयों की तरफ़ ध्यान ही नहीं जा रहा था। इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको आख़री बात कह दी कि अगर यह तुम्हारी बीवी इतनी बुरी है तो उसको तलाक़ देकर अलग कर दो। अब तलाक़ का नाम सुनकर उसके दिमाग़ में यह आया कि मेरी बीवी मेरा यह काम करती है, यह काम करती है, मेरे लिए वह इतनी फ़ायदेमन्द है, अगर मैंने तलाक़ दे दी तो ये सारे फ़ायदे जाते रहेंगे, तो मैं फिर क्या करूंगा और कैसे ज़िन्दगी गुज़ारूंगा। इसलिए फ़ौरन उसने कहा कि या रसूलल्लाह! मुझे उसके बग़ैर सब्र भी नहीं होता। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अच्छा तो फिर उसको रोके रखो।

बुराईयों की तरफ़ ध्यान करने का नतीजा

बात असल में यह है कि जब किसी की बुराईयां तुम्हारे दिल में बैठ जाती हैं, और उसकी बुराई की तरफ़ ध्यान लग जाता है तो फिर उसकी अच्छाईयों से आंखों पर पर्दे पड़ जाते हैं। इसलिए उसकी अच्छाईयों का तसव्वुर करो, और जब अच्छाईयों का तसव्वुर करोगे तो उसकी क़द्र दिल में बैठेगी और सुकून महसूस होगा। उस वक़्त पता चलेगा कि तक्लीफ़ तो पहुंचनी है, कोई न कोई बात तबीयत के ख़िलाफ़ होगी, लेकिन उस तबीयत के ख़िलाफ़ बात को बर्दाश्त करना पड़ेगा।

हो सकता है कि तुम ग़लती पर हो

यह बात समझ लें कि जब तुम किसी दूसरे की किसी

बात को अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ समझ रहे हो तो यह ज़रूरी नहीं कि वह शख़्स ग़लती पर हो, बल्कि यह भी हो सकता है कि वह दूसरा शख़्स ग़लती पर हो, और यह भी हो सकता है कि तुम ग़लती पर हो, क्योंकि तबीयतों का फ़र्क़ है।

जैसे एक आदमी को एक खाना पसन्द है, दूसरे को दूसरा खाना पसन्द है। एक आदमी को करेले पसन्द हैं, उसका सालन उसको मज़ेदार मालूम होता है, दूसरे आदमी को करेले ना पसन्द हैं, वह कहता है कि यह कड़वे हैं, मुझ से नहीं खाये जाते। यह तबीयत का इख़्तिलाफ़ है। अब यह ज़रूरी नहीं कि जो शख़्स यह कह रहा है कि मुझे करेले बहुत अच्छे लगते हैं, वह ग़लती पर है, या जो शख़्स यह कह रहा है कि मुझे करेले पसन्द नहीं, वह ग़लती पर है। बल्कि दोनों ग़लती पर नहीं हैं, लेकिन दोनों के मिज़ाजों का फ़र्क़ है, तबीयतों का फ़र्क़ है, वह भी अपनी जगह सही है और वह भी अपनी जगह पर सही है।

दोनों अपनी अपनी जगह पर दुरुस्त हों

इसलिए जिस जगह मुबाह (यानी जिनके करने में न सवाब हो और न गुनाह हो) चीज़ों के अन्दर आपस में इख़्तिलाफ़ होता है, वहां किसी एक फ़रीक़ को हक़ पर और दूसरे को बातिल पर नहीं कह सकते, बल्कि दोनों अपनी अपनी जगह पर दुरुस्त होते हैं। चुनांचे अक्सर मियां बीवी के दरमियान तबीयतों में इख़्तिलाफ़ होता हैं, जब दोनों इन्सानों की तबीयतों में इख़्तिलाफ़ होता है तो अगर सिन्फ़

भी बदल जाए कि एक मर्द है और एक औ़रत है, तो फिर तबीयतों का यह इख़्तिलाफ़ और ज़्यादा हो जाता है। औ़रत की एक फ़ितरत है और उसकी एक नफ़सियात है। मर्द की एक फ़ितरत है और उसकी एक नफ़सियात है। मर्द अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ सोचता है, औ़रत अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ सोचती है। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम उसकी सिर्फ़ बुराईयों को मत देखो बल्कि अच्छाईयों की तरफ़ भी देखो।

सीधा करना चाहोगे तो तोड़ दोगे

एक और बात याद आ गई वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रत को पस्ली से तश्बीह दी। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

المرأة كالضلع، إن اقمتها كسرتها، وان استمتعت بها، استمتعت بها وفيها عوج (بخاری شریف)

औ़रत पस्ली की तरह है, अगर तुम उसको सीधा करना चाहोगे तो उसको तोड़ दोगे। और अगर तुम उसको उसके हाल पर छोड़ दोगे तो इसके बावजूद कि वह तुमको टेढ़ी नज़र आ रही है फिर भी तुम उस से फ़ायदा उठा सकोगे।

औ़रत का हुस्न उसके टेढ़ेपन में है

अब बाज़ हज़रात यह समझते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसको टेढ़ी पस्ली कह दिया तो इस की बुराई बयान फ़रमा दी। चुनांचे बाज़ लोग इसको उसकी बुराई के मायने में इस्तेमाल करते हैं। और

जब उनका बीवी से झगड़ा होता है तो वह बीवी से ख़िताब करते हुए कहते हैं कि "ऐ टेढ़ी पस्ली में तुझे सीधा करके रहूंगा" हालांकि उन लोगों ने यह ग़ौर नहीं किया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पस्ली को टेढ़ी कह रहे हैं, पस्ली अगर टेढ़ी न हो बल्कि सीधी हो जाए तो वह पस्ली कहलाने के लायक़ नहीं। पस्ली का हुस्न और सेहत यह है कि वह टेढ़ी हो, अगर वह पस्ली सीधी हो जाए तो वह बीमार है।

टेढ़ा होना एक ज़ायद चीज़ है

हक़ीक़त में इस हदीस के ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह बतलाना चाह रहे हैं कि टेढ़ा होना और सीधा होना एक इज़ाफ़ी (ज़ायद) चीज़ है। जिसका मतलब यह है कि एक चीज़ को एक निगाह से देखो तो वह सीधी है और दूसरी निगाह से देखो तो वह टेढ़ी है। देखिए! सामने मस्जिद के बाहर जो सड़क है, अगर मस्जिद के अन्दर से देखो तो यह नज़र आयेगा कि यह सड़क टेढ़ी है, इसलिए कि मस्जिद के एतिबार से सड़क टेढ़ी है। और अगर सड़क पर खड़े होकर देखो तो यह नज़र आयेगा कि सड़क सीधी है और मस्जिद टेढ़ी है, हालांकि न सड़क टेढ़ी है और न मस्जिद टेढ़ी है। इसलिए कि मस्जिद के लिए यह ज़रूरी था कि वह क़िब्ले के रुख़ पर हो। इसलिए किसी चीज़ का सीधा और टेढ़ा होना इज़ाफ़ी सिफ़त है। एक चीज़ एक लिहाज़ से टेढ़ी है और दूसरे लिहाज़ से सीधी है।

औरत का टेढ़ापन कुदरती है

बहर हाल! इस हदीस के ज़रिए यह बताना मक़सूद है कि चूंकि तुम्हारी तबीयत औरत की तबीयत से अलग है। इसलिए तुम्हारे लिहाज़ से वह टेढ़ी है, लेकिन हक़ीक़त में वह टेढ़ापन उसकी फ़ितरत का हिस्सा है। जिस तरह पस्ली की फ़ितरत का हिस्सा यह है कि वह टेढ़ी हो। अगर पसली सीधी हो जाए तो उसको "ऐब" कहा जायेगा और डॉक्टर उसको दोबारा टेढ़ी करने की कोशिश करेगा, इसलिए कि उसकी फ़ितरत के अन्दर टेढ़ापन मौजूद है। इसलिए इस हदीस के ज़रिए औरत की बुराई बयान नहीं की जा रही है, बल्कि यह कहा जा रहा है कि चूंकि औरत की तबीयत तुम्हारी तबीयत के लिहाज़ से अलग है, इसलिए तुम्हें टेढ़ी मालूम होती है। लिहाज़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्ल. ने फ़रमाया कि उसको सीधा करने की फ़िक्र मत करना, क्योंकि उसको सीधा करना ऐसा ही होगा जैसे पस्ली को सीधा करना, और अगर तुम उसको सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसको तोड़ डालोगे। और अगर तुम उसको उसकी हालत पर छोड़ दोगे तो उसके टेढ़ा होने के बावजूद तुम उस से फ़ायदा उठाओगे।

बुढ़िया और शिकारी परिन्दे का वाक़िआ

अ़रबी सिखाने की एक किताब 'मुफ़ीदुत्तालिबीन' में एक क़िस्सा लिखा है कि बादशाह का एक शिकारी परिन्दा उड़कर एक बुढ़िया के पास पहुंच गया, उस बुढ़िया ने उसको पकड़ कर उसको पालना शुरू किया। जब बुढ़िया ने

यह देखा कि उसकी चोंच टेढ़ी है और उसके पन्जे टेढ़े हैं, तो बुढ़िया को उस पर तरस आया कि यह बेचारा परिन्दा है, अल्लाह की मख़्लूक़ है, जब इसको खाने की ज़रूरत होती होगी तो यह कैसे खाता होगा, क्योंकि इसकी चोंच टेढ़ी है, और जब इसको चलने की ज़रूरत होती होगी तो यह चलता कैसे होगा, इसलिए कि इसके पन्जे टेढ़े हैं। उस बुढ़िया ने सोचा कि मैं इसकी यह मुश्किल आसान करूं। चुनांचे कैंची से पहले उसकी चोंच काटी और फिर उसके पन्जे काटे, जिसके नतीजे में उसका ख़ून बहने लगा और वह ज़ख़्मी हो गया। जितना पहले चल सकता था, उस से भी वह माज़ूर हो गया। यह वाक़िआ नादान की मुहब्बत की मिसाल में पेश किया जाता है, क्योंकि उस बुढ़िया ने उस परिन्दे के साथ मुहब्बत तो की, लेकिन नादानी और बे-अक़्ली के साथ मुहब्बत की, और यह न सोचा कि इसकी चोंच और इसके पन्जों का टेढ़ा होना इसकी फ़ितरत का हिस्सा है और इसका हुस्न इसके टेढ़ेपन में है। अगर इसके ये अंग टेढ़े न हों तो यह "उक़ाब" यानी शिकारी परिन्दा कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं।

कभी सुकून नसीब नहीं होगा

बहर हाल! जब भी दो आदमियों के दरमियान ताल्लुक़ात होंगे, चाहे वे मर्द हों, या औरतें हों, उस ताल्लुक़ के नतीजे में तबीयतों का इख़्तिलाफ़ यानी अलग अलग होना ज़रूर ज़ाहिर होगा। और उस इख़्तिलाफ़ के नतीजे में एक को दूसरे से तक्लीफ़ भी पहुंचेगी। अब दो ही रास्ते हैं: एक रास्ता तो यह है कि जब भी दूसरे से तुम्हें कोई

तक्लीफ़ पहुंचे तो उस पर उस से लड़ो, और उस तक्लीफ़ को आपस में नाराज़गी और झगड़े का सबब बनाओ। अगर तुम यह रास्ता इख़्तियार करोगे तो तुम्हें कभी भी चैन और सुकून नसीब नहीं होगा।

दूसरों की तक्लीफ़ों पर सब्र

दूसरा रास्ता यह है कि जब दूसरे से तक्लीफ़ पहुंचे तो यह सोच लो कि जब तबीयतें मुख़्तलिफ़ (यानी अलग अलग) हैं तो तक्लीफ़ तो पहुंचनी ही है, और ज़िन्दगी भी साथ गुज़ारनी है, और यह ज़िन्दगी हमेशा की ज़िन्दगी तो है नहीं कि हमेशा हमेशा यहीं रहना हो, बल्कि चन्द दिनों के लिए इस दुनिया में आए हैं, न जाने किस वक़्त यहां से रवाना हो जाएं। इसलिए इस चन्द दिन की ज़िन्दगी में अगर दूसरे से तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उस पर अल्लाह के लिए सब्र कर लो। यह ठीक है कि जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचेगी तो उस वक़्त तुम्हारे दिल में इश्तिआल (उत्तेजना) पैदा होगा, गुस्सा आयेगा और दिल यह चाहेगा कि मैं उसका मुंह नोच डालूं, उसको बुरा भला कहूं, उसकी ग़ीबत करूं, उसकी बुराई बयान करूं, उसको बदनाम करूं, इसलिए कि उसने तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाई है।

तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल होगा?

लेकिन यह सोचो कि अगर तुमने ये काम कर लिए तो तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल हुआ? हां यह हुआ कि समाज में लड़ाई झगड़ा फैला और ज़रा सा दिल का जज़्बा ठन्डा हो

गया। लेकिन हक़ीक़त में दिल का जज़्बा ठन्डा नहीं होता, क्योंकि जब एक बार दुश्मनी की आग भड़क जाती है तो फिर वह ठन्डी नहीं होती बल्कि और बढ़ती रहती है। चलिए मान लीजिए कि यह थोड़ा सा फ़ायदा हासिल हो गया, लेकिन उस बदला लेने में तुमने जो ज़्यादती की होगी उसका तुम्हें क़ियामत के दिन जो हिसाब देना होगा और उस पर तुम्हें जो अ़ज़ाब झेलना होगा वह अ़ज़ाब इस से कहीं ज़्यादा है कि दुनिया में उसकी तक्लीफ़ पर सब्र कर लेते और यह सोचते कि चलो उसने अगरचे मेरे साथ ज़्यादती की है, लेकिन मैं इस पर सब्र करता हूं और अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूं।

सब्र करने का अज्र

अगर सब्र कर लिया तो उस पर अल्लाह तआ़ला का वायदा है:

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (سورة الزمر: آیت ۱۰)

यानी अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमाते हैं।

कोई गिनती ही नहीं, अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो गिनती बयान करते, लेकिन हम लोग गिनती से आ़जिज़ हैं, हमारे पास तो गिनती के लिए चन्द अ़दद (अंक) हैं, जैसे हज़ार, लाख, करोड़, अरब, खरब, पदम, बस आगे कोई और लफ़्ज़ नहीं है। अल्लाह तआ़ला चाहते तो सब्र का अज्र देने के लिए कोई लफ़्ज़ पैदा फ़रमा देते, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि सब्र करने वाले को अज्र देने के

लिए कोई गिनती ही नहीं।

जैसे अगर किसी ने तुम्हें एक मुक्का मार दिया, अब अगर बदले में तुमने भी उसको एक मुक्का मार दिया, तो तुम्हारे लिए यह बदला लेना जायज़ था, लेकिन उस बदला लेने के नतीजे में तुम्हें क्या मिला? कुछ नहीं। और अगर तुमने सब्र कर लिया और बदला न लिया तो उस पर अल्लाह तआ़ला का वायदा है कि तुम्हें इतना अज्र दूंगा कि तुम शुमार भी नहीं कर सकोगे। इसलिए सब्र पर मिलने वाले इस अज्र व सवाब को सोच कर ग़ुस्सा पी जाओ और बदला न लो।

बदला लेने से क्या फ़ायदा?

और अगर कोई दूसरा शख़्स तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचा रहा है तो शरीअ़त ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है कि उस तक्लीफ़ को जिस हद तक रोकना तुम्हारे लिए मुम्किन है उस हद तक उसका रास्ता बन्द करने की कोशिश कर लो, लेकिन अपने क़ीमती समय को उस तक्लीफ़ देने वाले के पीछे पड़कर ख़र्च करना, वक़्त और समय की इस से बड़ी बर्बादी कोई नहीं। जैसे आपने किसी से सुना कि फ़लां आदमी मज्लिस के अन्दर आपकी बुराई कर रहा था, अब अगर तुम्हें पता ही न चलता कि फ़लां आदमी बुराई कर रहा था, फिर तो कुछ भी न होता, लेकिन दूसरे शख़्स ने तुम्हें बता दिया, इसके नतीजे में तुम्हारे दिल पर चोट लग गई, अब एक रास्ता यह है कि तुम इसकी खोज में लग जाओ कि उस मज्लिस में कौन कौन मौजूद थे, और फिर

उनमें से हर एक के पास जाकर तफ़तीश करो कि फ़लां ने मेरी क्या बुराई बयान की? और हर एक से गवाही लेते फिरो, और अपना सारा वक़्त इस काम में ख़र्च कर दो, तो इसका हासिल क्या निकला? कुछ भी नहीं। इसके उलट अगर तुमने यह सोचा कि अगर फ़लां शख़्स ने मेरी बुराई बयान की थी तो वह जाने, उसका अल्लाह जाने, उसके अच्छा कहने से न मैं अच्छा हो सकता हूं और उसके बुरा कहने से न मैं बुरा हो सकता हूं, मेरा मामला तो मेरे अल्लाह के साथ है। अगर मेरा मामला मेरे अल्लाह के साथ दुरुस्त है तो फिर दुनिया मुझे कुछ भी कहती रहे, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं।

ख़लक़े पसे ऊ दिवाना व दिवाना बकारे

यानी सारी मख़्लूक़ अगर मेरी बुराई करती है तो करती रहे। मेरा मामला तो अल्लाह तआ़ला के साथ है।

अगर यह सोच कर तुम अपने काम में लग जाओ तो यह "सब्र अ़लल् अज़ा" (यानी तक्लीफ़ पर सब्र करना) है जिस पर अल्लाह तआ़ला बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

बराबर का बदला लो

और अगर तुमने दिल की आग ठन्डी करने के लिए बदला लेने का ही इरादा कर लिया कि मैं तो बदला ज़रूर लूंगा, तो बदला लेने के लिए वह तराज़ू और पैमाना कहां से लाओगे जिस से यह पता चले कि मैंने भी उतनी ही तक्लीफ़ पहुंचाई है जितनी तक्लीफ़ उसने पहुंचाई थी?

अगर तुम तक्लीफ़ पहुंचाने में एक इंच और एक तोला आगे बढ़ गए तो उस पर आख़िरत में जो पकड़ होगी उसका हिसाब कौन करेगा? इसलिए बदला लेने का आपको हक़ हासिल है, मगर यह हक़ बड़ा ख़तरनाक है। लेकिन अगर तुमने माफ़ कर दिया तो उस पर बे हिसाब अज्र व सवाब के हक़दार बन जाओगे। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ (سورۃ النحل: آیت ١٢٦)

यानी अगर सब्र करो तो सब्र करना हद दर्जा बेहतर है, सब्र करने वालों के लिए।

ख़ुलासा

बहर हाल! जब लोगों के साथ रहोगे, उनके साथ ताल्लुक़ात रखोगे, और उनके साथ मामलात होंगे तो फिर तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी। लेकिन इसका नुस्ख़ा नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि उन तक्लीफ़ों पर सब्र करे, और हर शख़्स अपने दिल पर हाथ रख कर सोचे कि अगर हर इन्सान इस नुस्ख़े पर अ़मल कर ले और यह सोच ले कि दूसरे की तरफ़ से जो तबीयत के ख़िलाफ़ चीज़ें पेश आयेंगी, उस पर जहां तक हो सकेगा सब्र करूंगा, तो दुनिया से तमाम झगड़े और फ़साद ख़त्म हो जाएं। अल्लाह तआ़ला मुझे भी और आपको भी इस बेहतरीन नुस्ख़े पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین